लालबहादुर शास्त्री महाविद्यालय,

सातारा

दिनांक : २९/६/२०००

हम संस्तुति करते हैं कि प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

(डॉ. बी. डी. सगरे)	(श्री. आर.जी. चव्हाण.)
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,	प्राचार्य,
लालबहादुर शास्त्री महाविद्यालय,	लालबहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा.	सातारा.

L. B. S. COLLEGE SATARA

प्रख्यापन

चित्रलेखा उपन्यास में चित्रित जीवन दर्शन

यह शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल. के लघु शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई।

स्थान : फलटण

दिनांक : 29/06/2000

कु. वनिता हरिश्चंद्र कर्णे

शोध छात्रा

प्रमाणपत्र

प्रा. डॉ. राजेंद्र शाह

एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी.

रीडर एवं हिंदी विभाग प्रमुख,

मुधोजी महाविद्यालय, फलटण

(जि. सातारा) महाराष्ट्र

मैं प्रा. डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शाह, प्राध्यापक तथा हिंदी विभागाध्यक्ष, मुधोजी महाविद्यालय, फलटण, यह प्रमाणित करता हूँ कि कु. वनिता हरिश्चंद्र कर्णे ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए भगवतीचरण वर्मा के चित्रलेखा उपन्यास में चित्रित जीवन दर्शन लघु-शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। शोधार्थी की यह मौलिक कृति है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध कला विद्या शाखा (फॅकल्टी ऑफ आर्टस्) तथा हिंदी विषय से संबंधित उपन्यास विधा के अंतर्गत समाविष्ट है।

मैं संस्तुति प्रस्तुत करता हूँ कि इसे परीक्षा के हेतु अग्रेषित किया जाए।

शोध निर्देशक

प्रा. डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शाह

हिंदी विभाग प्रमुख

मुधोजी महाविद्यालय, फलटण

भूमिका

हिंदी साहित्य में अनेक विधाएँ हैं, इन विधाओं में मुझे उपन्यास में अधिक रुचि है। रुचि होने की वजह से मैंने अनेक उपन्यास पढ़े। प्रेमचंदोत्तर काल के अग्रणी लेखक भगवतीचरण वर्मा के साहित्य को पढ़कर मैं अत्यधिक प्रभावित हुई। उनके अधिकतर साहित्य में मध्य वर्गीय लोगों का जीवन, उनकी समस्याएँ तथा वर्तमान समाज में नारी का स्थान, नारी की विविध समस्याओं का वास्तविक चित्रण मिलता है। वर्माजी विद्रोही स्वभाव के है अतः उनके साहित्य में क्रांतिकारी स्वर दिखाई देते हैं।

वर्माजी द्वारा प्रकाशित उपन्यासों में मुझे 'चित्रलेखा' उपन्यास ने बहुत ही प्रभावित किया। विशेषतः उसके दार्शनिक एवं सामाजिक पक्ष ने आकर्षित किया। अतः मैंने एम.फिल. करते समय 'चित्रलेखा' उपन्यास पर लघु शोध कार्य करने का निश्चय किया, जिसे मेरे गुरुवर्य तथा मार्गदर्शक डॉ. शाह सर जी ने प्रोत्साहित किया। फलस्वरूप मैंने **"भगवतीचरण वर्मा के 'चित्रलेखा' उपन्यास में चित्रित जीवन-दर्शन"** इस विषय को निश्चित किया।

"भगवतीचरण वर्मा के 'चित्रलेखा' उपन्यास में चित्रित जीवन-दर्शन" लघु शोध प्रबंध को मैंने पाँच अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय में वर्माजी का जीवनवृत्त, व्यक्तित्व और कृतित्व होगा। उसमें जन्म-तिथि, जन्म-स्थान, माता-पिता, परिवार, शिक्षा-दीक्षा, व्यक्तित्व और कृतित्व की विस्तारपूर्वक चर्चा की जाएगी।

द्वितीय अध्याय में 'चित्रलेखा' उपन्यास की कथावस्तु के अनुशीलन के अंतर्गत उपन्यास की पूरी कथा का सूक्ष्म अध्ययन-विश्लेषण किया जाएगा। कथावस्तु के आधार मानव जीवन की समस्याओं का उद्घाटन कैसे किया है इस की चर्चा होगी।

तृतीय अध्याय 'चित्रलेखा' उपन्यास के ऐतिहासिक पक्ष पर आधारित होगा। अतः उसका पूरा वातावरण : तत्कालीन पात्र, प्रसंग, घटना, समाज, नगर, प्रासाद, राजमार्ग का वर्णन एवं विश्लेषण होगा।

चतुर्थ अध्याय है 'चित्रलेखा' उपन्यास का सामाजिक पक्ष। इसकी कथा प्राचीन कालीन होने के कारण तत्कालीन समाज की स्थिति, रीति-रिवाज, संस्कार, मनोदशा आदि का यथार्थ विश्लेषण किया जाएगा। नारी का समाज में स्थान तथा उसकी समस्या पर भी प्रकाश डाला जाएगा। साथ ही समाज में विधवा नारी की स्थिति का भी चित्रण किया जाएगा। तत्कालीन समाज पर बौद्ध धर्म का प्रभाव कैसा था? इसको भी चित्रित किया जाएगा।

पंचम अध्याय में, 'चित्रलेखा' उपन्यास के दार्शनिक पक्ष पर विचार किया जाएगा। पाप-पुण्य के बारे में तथा नियतिवाद के बारे में वर्माजी का दृष्टिकोण देखा जाएगा। मनुष्य किस प्रकार परिस्थितियों का दास है? जीवन क्या है? जीवन के मार्ग कौन-से हैं? इन सभी प्रश्नों के उत्तर दार्शनिक पक्ष के माध्यम से देने का प्रयास किया जाएगा।

उपसंहार में पहले अध्यास से लेकर पाँचवें अध्याय तक अनुशीलन करने पर जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उन्हें प्रस्तुत किया जाएगा।

यह मेरा परम सौभाग्य है कि मेरे इस लघु शोध-प्रबंध के लिए मेरे गुरुवर्य प्रा. डॉ. राजेंद्र शाह जी के निर्देशन में शोध कार्य करने का अवसर मिला। उनके उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का ही यह शुभ परिणाम है कि मैं एकनिष्ठ भाव से शोध-कार्य में संलग्न रहने की धैर्य-शक्ति पा सकी तथा अंततः कार्य को संपन्न कर सकी।

शोध-प्रबंध के लिए मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन देनेवाले श्रद्धेय प्राचार्य डॉ. चव्हाण जी, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा; डॉ. बी. डी. सगरे, हिंदी विभागाध्यक्ष; ग्रंथपाल लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा; आदरणीय डॉ. पी. एस. पाटील, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर; हमारे आदरणीय प्राचार्य एम. बी. जगदाले; मुधोजी महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. साळुंके; मुधोजी महाविद्यालय, फलटण के ग्रंथपाल प्रा. जी. जी. पवार आदि के सहयोग तथा योगदान के लिए साभार स्मरण करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। इस कार्यकाल में ही मेरा विवाह हो गया। मेरे पति प्रा. राजेंद्र लोणकर, के सहयोग एवं मार्गदर्शन के बिना मैं यह कार्य पूरा ही नहीं कर पाती। उनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

मैं इस लघु शोध-प्रबंध के टंकलेखन और सुयोग्य प्रस्तुति के लिए श्री. पराग शाह, पुणे ने जो कष्ट उठाए हैं, उनके प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ।

विविध प्रयत्नों के बावजूद भी इस लघु शोध-प्रबंध में कुछ त्रुटियाँ रह जाना संभव है। निर्दोषता का दावा तो मैं नहीं कर सकती। फिर भी यदि सहृदय पाठकों को श्री भगवतीचरण वर्मा के 'चित्रलेखा' उपन्यास में चित्रित जीवन-दर्शन का परिचय देकर उनका रसास्वादन कराने में मुझे किंचित मात्र भी सफलता मिली तो मैं अपने परिश्रम को सार्थक समझूँगी।

- शोध छात्रा

अनुक्रमाणिका

प्रथम अध्याय : 'भगवतीचरण वर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' 9

जीवन वृत्त तथा व्यक्तित्व : जन्मस्थान, जन्म तिथि, माता-पिता, शिक्षा-दीक्षा।

कृतित्व : कवि की कृतियाँ - उपन्यास-कहानियाँ-काव्यसंग्रह।

द्वितीय अध्याय : 'चित्रलेखा' उपन्यास की कथावस्तु का अनुशीलन। 28

कथावस्तु की पृष्ठभूमि, स्थान-घटना, लेखक की भूमिका, पाप-पुण्य की समस्या।

तृतीय अध्याय : 'चित्रलेखा' उपन्यास में चित्रित जीवन-दर्शन : ऐतिहासिक पक्ष 45

इतिहास का अर्थ, ऐतिहासिकता का अर्थ, तत्कालीन ऐतिहासिक स्थिति, बौद्धकालीन परिस्थिति का प्रभाव।

चतुर्थ अध्याय : 'चित्रलेखा' उपन्यास में चित्रित जीवन-दर्शन : सामाजिक पक्ष 63

समाज का अर्थ, महत्त्व, सामाजिक समस्याएँ, प्रेम संबंधी विश्लेषण, तत्कालीन सामाजिक स्थिति, नारी समस्या, विधवा समस्या, आर्थिक समस्या।

पंचम अध्याय : 'चित्रलेखा' उपन्यास में चित्रित जीवन दर्शन : दार्शनिक पक्ष 84

दार्शनिक का अर्थ-विश्लेषण, समस्याप्रधान उपन्यास, तत्कालीन आचार-विचार, रहन-सहन, जीवन क्या है, प्रवृत्ति मार्ग, निवृत्ति मार्ग, नियतिवाद, प्रेम की विवेचना, पाप-पुण्य की समस्या का वर्णन।

उपसंहार : 111

परिशिष्ट एवं संदर्भ-ग्रंथ सूची : 119